केन्द्रीयकरण, विकेन्द्रीयकरण और अकेन्द्रीयकरण

व्यवस्था के तीन तरीके माने गये हैं (1)तानाशाही (2)लोकतंत्र (3)लोक स्वराज्य। तानाशाही व्यवस्था में सत्ता तथा अधिकारों का केन्द्रीयकरण, लोकतंत्र में सत्ता का विकेन्द्रीयकरण और लोक स्वराज्य प्रणाली में अधिकारों का विकेन्द्रीयकरण होता है, जिसे हम सत्ता का अकेन्द्रीयकरण भी कह सकते है। यदि हम व्यवस्था के चार भाग '' (1)व्यवस्था (2)सुव्यवस्था (3)कुव्यवस्था (4)अव्यवस्था '' के रूप में करें तो तानाशाही में या तो सुव्यवस्था होगी या कुव्यवस्था। इसी तरह लोकतंत्र में या तो व्यवस्था हो सकती है या अव्यवस्था और लोक स्वराज्य में सिर्फ व्यवस्था ही संभव है।

तनाशाही मे न व्यवस्था संभव है न अव्यवस्था। यदि तानाशाह अच्छा आदमी है तो सुव्यवस्था गदा और बुरा है तो कुव्यवस्था। सुव्यवस्था या कुव्यवस्था तानाशाह के चरित्र पर निर्भर करती है। तानाशाही में सारे अधिकार कन्द्रित होते हैं। नागरिकों को मूल अधिकार भी प्राप्त होता है। प्रचार तंत्र पर शासक का पूरा अधिकार होता है। आम लोग अपने विचार स्वतंत्रता पूर्वक व्यक्त नहीं कर सकते। एक प्रकार से मालिक और गुलाम सरीखें संबंध हो जाते हैं। अपराध भी शासन की मर्जी के बिना नही कर सकते। रेलें समय पर चलती है। आफिस में समय से काम होता है। भ्रष्टाचार कम हो जाता है। शासक और शासित नामक दो वर्ग बन जाते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो सर्वाधिकार सम्पन्न और सर्वाधिकार विहीन वर्ग भी कह सकते हैं। साम्यवाद किसी भी लक्षण से लोकतंत्र की श्रेणी में नहीं आता। साम्यवाद और तानाशाही में इतना ही अन्तर है कि तानाशाही में व्यक्ति की तानाशाही हाती है और साम्यवाद में ग्रुप की। इसलिये हम साम्यवाद पर पृथक से चर्चा नहीं कर रहे।

लोकतंत्र तानाशाही से बिल्कुल भिन्न प्रणाली है। लोकतंत्र में सत्ता का विकेन्द्रीयकरण होता है। लोकतंत्र में न सुव्यवस्था हो सकती है न ही कुव्यवस्था। लोकतंत्र में या तो व्यवस्था सभव है या अव्यवस्था। पश्चिम के देशों में व्यवस्था है और पूर्व के लोकतांत्रिक देशों में अव्यवस्था। यद्यपि दोनों ही क्षेत्रों में लोकतंत्र स्थापित है। भारत, पाकिस्तान, बगलादेश, श्रीलंका आदि देशों में लगभग अव्यवस्था है जबकि अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस आदि में व्यवस्था।

लोक स्वराज्य प्रणाली लोकतंत्र का ही एक संशोधित स्वरूप हैं। इसमें न सुव्यवस्था हो सकती हैं न कुव्यवस्था क्योंकि ये दोनो तो तानाशाही के गुण ह और लोकस्वराज्य व तानाशाही में दूर दूर तक कोई संबंध नहीं है। किन्तु लोकस्वराज्य प्रणाली लोकतंत्र का ही सुधरा स्वरूप होने से इसमें लोकतंत्र के अनेक गुण मौजूद हैं अर्थात् लोकस्वराज्य में सिर्फ व्यवस्था ही संभव है अव्यवस्था नहीं। अव्यवस्था लोकतंत्र का संभावित खतरा है जो लोकस्वराज्य प्रणाली में बिल्कुल नहीं है।

इन सबको ठीक से समझने के लिये हमें सुव्यवस्था कुव्यवस्था और अव्यवस्था ओर व्यवस्था का अन्तर समझना होगा। जब आम नागरिक किसी के भय से ठीक ठीक आचरण करता है और भय पैदा करन वाला स्वयं उक्त भय का दुरूपयोग नहीं करता उसे हम सुव्यवस्था कहते हैं। जब आम नागरिक तो किसी सत्ता के भय स ठीक ठीक आचरण करता है किन्तु शासक उक्त भय का अपने हित में लाभ उठाता है उसे हम कुव्यवस्था कहते हैं। जब आम नागरिक भय मुक्त होकर गलत आचरण करते हैं उसे हम अव्यवस्था कहते हैं आर जब आम आदमी भय मुक्त होकर ठीक ठीक आचरण करता है उसे हम व्यवस्था कहते हैं। अव्यवस्था में आम नागरिको के चरित्र में गिरावट निश्चित हैं। शेष तीन में आम नागरिकों का चरित्र पतन नहीं होता। यह अलग बात है कि तानाशाही में गुलामी होती है और लोकतंत्र में स्वतत्रता या स्वच्छंदता।

तानाशाही में अव्यवस्था का खतरा नहीं होता और लोकतंत्र म अव्यवस्था का खतरा रहता ही है। हम जिस लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहते हैं उस लक्ष्य की प्राप्ति में तानाशाही साधक और अव्यवस्था बाधक होती है। अनुभव बताता है कि जिन परिवारों में या संगठनों में निर्णय का एक ही केन्द्र रहा वे अधिक तीव्र गति से आगे बढ़ते हैं, उनकी अपेक्षा, जहॉ निर्णय का कोई केन्द्र नहीं होता। भारत की राजनीति में इस बात को और स्पष्ट देखा जा सकता है। भारत के राजनैतिक दलों में से भाजपा को छोड़कर अन्य सबकी प्रगति की रफ्तार बहुत तीव्र है क्योंकि उन सब में जरा भी न लोकतंत्र है न अव्यवस्था। लोकतंत्र क लिये समाजवादी खेमा विख्यात है अन्य किसी भी राजनैतिक दल की अपेक्षा उनमें लोकतांत्रिक व्यवस्था अधिक है। यही कारण है कि समाजवादी विचारों के लोग एक साथ मिलकर कभी आगे नहीं बढ़ सक। किन्तु वहीं समाजवादी जब अलग अलग होकर अपनी अपनी तानाशाही में दल चलाने लगे तो संयुक्त समाजवादियों की अपेक्षा कई गुना अधिक प्रगति कर गये। कांग्रेस पार्टी जब भी लोकतंत्र की दिशा में लौटती है तभी उसके दुष्परिणाम दिखाई देने लगते हैं। हार थक कर वह फिर नेहरू परिवार की तानाशाही की ओर लौट जाती है। साम्यवाद सैद्धान्तिक आधार पर अनेक बुराईयों की जड़ होते हुए भी यदि अब तक भारत में बचा है तो सिर्फ इसी गुण के कारण को उसमें एक गुट की तानाशाही है। भारतीय जनतापार्टी में आंशिक लोकतंत्र है अर्थात् संघ परिवार और अटलजी के ग्रुप हैं। यदि भारतीय जनतापार्टी में भी अटलजी और संघ में से किसी एक की तानाशाही हो जाती तो भाजपा बहुत अधिक तेज गति से प्रगति कर सकती थी। किन्तु ऐसा नहीं हो सका। कुछ वर्षो तक भाजपा में संघ की चली तब भी उसने तेज प्रगति की ओर सत्ता काल में भाजपा में अटल जो की चली तब भी खूब प्रगति हुई। लेकिन पिछले दो तीन वर्षो स संघ ने अटल जी पर लगाम लगानी शुरू की जिसका परिणाम सबके सामने है। सर्वोच्च निर्णय के एक से अधिक ध्रुव होना सफलता में बाधक होता है और हुआ।

तानाशाही लक्ष्य प्राप्ति में सहायक होते हुए भी न्याय में बाधक है अन्य लोगों की क्षमता का पर्याप्त विकास नहीं हो पाता। निर्णय गलत होत हुए भी मानना हमारी मजबूरी है। आम नागरिकों का दुहरा आचरण हो जाता है न निर्णय की स्वतंत्रता होती है न ही अभिव्यक्ति की। भारत के राजनैतिक दलों की पणाली को देखकर अच्छी तरह समझा जा सकता है कि ये राजनतिक दल आम नागरिकों के शोषण के सिद्धान्त पर अपने अपने नेताओं की चाटुकारिता करते हैं अन्यथा यदि इनमें जरा सी भी आत्मा होती तो कभी ऐसी तानाशाही सहन नहीं करते। किन्तु स्वार्थ के कारण मजबूर हैं।

निष्कर्ष निकालना कठिन हैं। तानाशाही और लोकतत्र के अपने अपने गुण अवगुण हैं। बहुत लम्बे विचार मंथन के बाद निष्कर्ष निकला को लोकस्वराज्य प्रणाली इसका अच्छा विकल्प हो सकती है। यह प्रणालो लोकतंत्र का एक सुधरा हुआ स्वरूप है। इसमें प्रत्येक इकाई के अपने इकाईगत मामले में निर्णय की संपूर्ण स्वतंत्रता है। व्यक्ति के व्यक्तिगत या सपरिवार के पारिवारिक मामलों में न गॉव हस्तक्षेप करेगा न राष्ट्र। गॉव के गॉव संबंधी मामलों में भी कोई अन्य का हस्तक्षेप वर्जित होगा। इसका अर्थ यह भी हुआ कि गॉव के गॉव संबंधी मामलों में कोई व्यक्ति या परिवार गॉव की सहमति के बिना अपना निर्णय थोपते हैं तो वह अपराध होगा चाहे वह व्यक्ति या परिवार उसी गॉव का सदस्य क्यों न हो। अर्थात् लोकस्वराज्य प्रणाली में प्रत्येक इकाई अपनी आन्तरिक कार्यप्रणाली तय करने के लिये स्वतंत्र होगी। यह कायप्रणाली सबकी सहमति से ही तय होगी किन्तु सब लोग मिलकर किसी एक व्यक्ति को भी निर्णय के अधिकार सौंप सकते हैं। केन्द्र के पास बहुत कम दायित्व होंगे। न भ्रष्टाचार होगा न अपराध, क्योंकि भ्रष्टाचार के अवसर ही न्यूनतम हो जावेंगे और केन्द्रीय प्रशासन का बहुत कम दायित्व रहने से अपराधों पर भी रोक लग जायेगी।

समाज शास्त्र का एक सीधा सा सिद्धान्त है कि किसी कार्य के परिणाम से प्रभावित होने वाली इकाई और कर्ता इकाई के बीच दूरी जितनी कम होगी, कार्य की गुणवत्ता उतनी ही अधिक होगी। इस दूरी को यदि शून्य तक कर दिया जावे तो पूर्ण व्यवस्था हो जायेगी अर्थात् लोक स्वराज्य आ गया। लोक स्वराज्य को यह अच्छी और सरल परिभाषा है। लोक स्वराज्य प्रणाली में यदि सब मिलकर किसी एक व्यक्ति को इकाई संबंधी निर्णय के अधिकतम अधिकार सौंप दें और सिर्फ पांच वर्ष में उसकी समीक्षा का अधिकार अपने पास रखें तो यह सर्वोत्तम प्रणाली हो सकती है। इसमें तानाशाही के भी दुर्गुणों से बचा जा सकता है आर लोकतंत्र के भी दुर्गुणों से। क्योंकि इसमें न अव्यवस्था हो सकती है न कुव्यवस्था। सुव्यवस्था भी इसलिये नहीं होगी कि व्यवस्था तो कर नहीं रहा। अपनी व्यवस्था वह चाहे जैसी करें। इससे समाज में सिर्फ व्यवस्था ही मजबूत होगी और यही हमारा अभीष्ट भी है।

इस तरह हम इस नतीजे पर पहुॅचते हैं कि सत्ता का अकेन्द्रीयकरण या अधिकारों का विकेन्द्रीयकरण ही व्यवस्था का एकमात्र मार्ग है। यह प्रणाली सम्पूर्ण विश्व में सफल हो सकती है किन्तु जिन देशों में वर्तमान में अव्यवस्था है वहॉ तो इसके तत्काल प्रयास प्रारंभ कर देने चाहिये। दुर्भाग्य से भारत उन देशों में शामिल है और सभी समस्याओं का यही एकमात्र मार्ग है।

नोट– मैंने इस विषय में जो लेख लिखा है उस संबंध में मैं स्वतः भी अभो मंथन प्रकिया से गुजर रहा हूॅ। आप पाठकों के सुझाव या पश्न मेरे चिन्तन में सहायक होंगे।

(1)श्री प्रमोद कुमार वात्सल्य, रिषिकेष, 249201

आपकी पत्रिका तथा विचार निरंतर मिलते रहे हैं। कुछ गुमराह परन्तु चमत्कारिक बुद्धि जीवियों तथा ढोंगी सन्यासियों की तिकड़म भारी विवेकहीन आलोचनाओं के बाद भी आपकी विचार क्रान्ति एवं वैचारिक चेतना का विकास संतोषजनक एवं सराहनीय है।

कुछ गेरूआधारी गुमराह ढोंगी गुरू केवल दोष देखने के आदी हो चुके हैं और अपने इन्हीं दोषों, इर्ष्या, कुंठा तथा मूर्खतापूर्ण अहंकार के कारण दूसरों को जानबूझकर हतोत्साहित करते रहते हैं। ये लोग न स्वयं कुछ कर सकते हैं न दूसरों को करते हुए देख सकते हैं। मुझे दुख और चिन्ता होती है ऐसे कुंठा तथा अहकार ग्रस्त सन्यासियों को देखकर। आप इस संबंध म भी अपने विचार लिखें।

उत्तर– सन्यासी की भूमिका समाज में बहुत महत्वपूर्ण होती है। सन्यासी सत् न्यासी अर्थात् Trustee of the truth होता है। सन्यास की महत्ता तथा सम्मान समाज में सर्वोच्च होता है। सन्यासी धर्म जाति से परे सिर्फ मानव समाज का प्रतिनिधि होने क आधार पर चोटी नहों रख सकता, यज्ञ नहीं कर सकता और किसी तरह की सम्पत्ति भी नहीं रख सकता है।

सन्यासी में ज्ञान और त्याग दोनां ही का सर्वोच्च स्तर अनिवार्य है। यदि दो में से सिर्फ एक है तो वह या तो सन्यासी हो नहीं सकता और यदि है तो घातक होगा। यदि सन्यासी त्याग प्रधान हुआ किन्तु बुद्धि से कमजोर हुआ तो उसका समाज में गलत संदेश जायेगा और यदि सन्यासी बुद्धि प्रधान हुआ किन्तु त्याग नहीं रहा तो वह स्वयं समाज को लूट लेगा। सन्यास का पद बहुत महत्व का है इसीलिये वस्त्र धारण के पूर्व कठिन परीक्षाओं से गुजरना आवश्यक था। सन्यासी के लिये दण्ड प्रावधान भी सामान्य नागरिक से भिन्न थे। यदि सन्यासी ने भूलवश कोई अपराध किया है तो उसे सामान्य से बहुत कम दण्ड दिया जाता था और यदि उसने स्वार्थ वश या जानबूझकर अपराध किया है तो उसे सामान्य से बहुत अधिक दण्ड भुगतान पडता था। आज सन्यास का समाज मे

सम्मान तो है किन्तु कपड़े पहनने के पूर्व की कठिन परीक्षा की व्यवस्था छिन्न भिन्न होने से ढोंगी और स्वार्थी लोग चमत्कारिक बुद्धि का उपयोग करके समाज में भ्रान्ति फैलाते हैं। मैंने भी एक या दो बार रंगीन कपड़े पहनकर सन्यास का विचार किया किन्तु अभी अपने का उतने उच्च स्तर की तुलना में कम मानकर प्रतीक्षा करना उचित समझा। सन्यासियों से मेरा बहुत सम्पर्क हुआ। अनेक सन्यासियों ने मुझे बहुत सहायता की है। हमारे पंद्रह वर्षो के रिसर्च में भी कई सन्यासियों ने सहयोग किया है। कुछ सन्यासी यदि ईर्ष्या द्वेष या अहंकार वश विरोध भी करें तो वे अपना अहित और मेरा हित ही करेंगे क्योंकि यदि उनका विरोध स्वार्थ वश होगा तो उनका सन्यास खतरे में पड़ेगा, मेरा नहीं। हमें ऐसी आलोचना से अपने विषय में पुनर्विचार का अवसर मिलता हैं। अतः चिन्ता की कोई बात नहीं है।

(2). बुधमल शामसुखा, सफदरगुंज एन्क्लेव, दिल्ली

आप सत्ता क विकेन्द्रीयकरण की बात करते हैं। किन्तु पूरा देश जानता है कि आपातकाल में जब सत्ता केन्द्रित हुई तो पूरे देश की ग्यारह समस्याओं में बहुत सुधार हुआ। समाज में अनुशासन मजबूत हुआ। अपराधी अपराधों से डरने लगे। फिर आप विकेन्द्रीयकरण को कैसे उचित ठहराते हैं?

(3). श्री राधा कृष्ण गेरा ए 243 /2 अशोक बिहार I दिल्ली 110052

ज्ञान तत्व में आप प्रायः विकेन्द्रीयकरण के पक्ष में लिखते हैं। किन्तु इतिहास बताता है कि जब जब केन्द्र कमजोर हुआ तब तब भारत गुलाम हुआ है। राजनैतिक सुधारों को शेषन ने पूरे दम के साथ लागू किया। जब उसे त्रिसदस्यीय बना दिया गया तो सारा दम कमजोर पड़ गया। इन्दिरा जी ने आपातकाल लगाया। समय की पुकार थी। पूँजीवादी लोग सारी सीमाएँ लाँघ चुके थे। उन्हें नियंत्रित करना आवश्यक था। आपातकाल बरा नहीं था। किन्तु कुछ लोगों ने उसका दुरूपयोग किया जिसके कारण जनता ने उसे नकार दिया। अतः मेरा विचार है कि संविधान संशोधन पर अपनी शक्ति न लगाकर अनुशासन, त्याग, दृढ़ संकल्प आदि को मजबूत करने में अपनी शक्ति लगानी चाहिये।

उत्तर :– इस अंक में एक लेख केन्द्रीयकरण, विकेन्द्रीयकरण और अकेन्द्रीयकरण के नाम से जा रहा है। इन प्रश्नों का कुछ समाधान इस लेख से संभव है। पुनः प्रश्न होन पर और चर्चा आगे बढ़ सकती है।

मैं आपके निष्कर्ष से सहमत हूँ कि केन्द्र का कमजोर होना घातक है। कमजोरी दो तरह से आती है (1) शक्ति मे कमी (2)दायित्वों में वृद्धि। अधिकार और दायित्वों के बीच असंतुलन कमजोरी का आधार होता है। मैंने केन्द्र के अधिकारों में कमी की कोई बात नहीं की है बल्कि दायित्वों में कमी की बात की है। एक दस क्विंटल ढोने की क्षमता वाली बैलगाड़ी पर बीस क्विंटल माल लदा हा और हम और माल लादने की तैयारी कर तो उसका दुष्प्रभाव निश्चित है। गाड़ी के वजन का विकेन्द्रीयकरण उसकी भार वहन क्षमता को संतुलित करेगा। हमारा विकेन्द्रीयकरण केन्द्र को मजबूत करेगा। हम पूरी पुलिस केन्द्र को दे रहे हैं, पुलिस और न्यायालय के बजट में पांच से दस गुनी वृद्धि कर रहे हैं, सेना, पुलिस, वित्त, विदेश और न्याय के अतिरिक्त सारा दायित्व केन्द्र से हटाकर नीचे की इकाइयों को दे रहे हैं तो इससे केन्द्र बहुत शक्तिशाली होगा। आप विकेन्द्रीयकरण या अकेन्द्रीयकरण में जरा भी केन्द्र के कमजोर होने की शंका न करें। इस विषय में गंभीर विचार मंथन करके ही यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है।

(4) श्री पंचम भाई हस्तेड़िया, राजस्थान

ज्ञान तत्व अंक सत्तासी को ध्यान से पढ़ा। व्यवस्था परिवर्तन की बातें तो बहुत लोग करते हैं जिनमें हमारे सर्वोदयी साथी तो और भी आगे ह किन्तु आपके निष्कर्ष तथा सक्रियता के रास्त जितने स्पष्ट हैं उतने उनके नहीं। स्वतंत्रता के सत्तावन वर्षो के बाद भी यह प्रश्न आज भी विवादास्पद बना हुआ है कि हम कितनी प्रगति कर रह हैं और कितनी गिरावट आई है। मैं तो देख रहा हूँ कि गाँव उजड़ रहे हैं आर शहर भी सड़ रहे हैं। पूरी तरह गिरावट ही गिरावट है। फिर भी एक पक्ष विकास की डींग हांकता नहीं थकता तो दूसरा पक्ष अपर्याप्त विकास कहकर और अधिक विकास की बात करता है। दोनों ही पक्ष सत्य को पीछे ढकेल कर असत्य को स्थापित करने में लगे हैं।

त्रिसूत्रीय संविधान संशोधन अभियान सही दिशा में प्रथम चरण हैं। एक करोड़ हस्ताक्षरों का प्रयास सर्वोदय ने रखते हुए भी पच्चीस लाख का लक्ष्य घोषित किया था। कितनी प्रगति हुई है। मैं चाहता हूँ कि सांसदों को यह बात समझाई जाय या उन्हें बुलाकर प्रत्यक्ष दिखाया जावे तो अवश्य ही कुछ सांसद प्रभावित होंगे। मैं इस कार्य में ग्यारह सौ रूपया की सहायता करना चाहता हूँ। जनता को तत्काल जगाना आवश्यक है। तुरंत ही कोई अभियान शुरू करिये।

उत्तर– आपका सुझाव बहुत अच्छा है। हम सांसदों तक प्रत्यक्ष विचार पहुँचाने की योजना से सहमत हैं। जनजागरण अभियान पांच अक्टूबर से प्रारंभ हो चुका है। सर्वादय इस दिशा में प्रयत्नशील हैं ही, भारत विकास संगम भी ऐसे जन जागरण अभियान की योजना पर विचार कर रहा है। गोविन्दाचार्य जी व्यवस्था परिवर्तन के प्रति पर्याप्त गंभीर हैं। लोक स्वराज्य मंच अपने सीमित

संसाधनों स एकमात्र इसी अभियान में लगा है। मैं व्यक्तिगत रूप से तीनो के साथ जुड़कर काम कर रहा हूॅ। आशा है कि परिणाम शीघ्र दिखेगा।

श्री अशोक अग्रवाल अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़

निर्दलीय साप्ताहिक में श्री अनिल कुमार मिश्र की गोधरा कांड पर बनर्जी आयोग के निष्कर्षो पर टिप्पणी पढ़ी। श्री मिश्र ने लिखा है कि यदि गोधरा में रेल वैक्यूम फेल के कारण रूकी थी तो प्रश्न उठता है कि यात्री स्टेशन पर उतर क्यों नहीं सके ? शाट सर्किट या खाना बनाने की आग भी जोर से किसी एक स्थान से पकड़ती और यात्रियों के निकल भागने के चारों दरवाजे मौजूद थे। तब यात्रियों के बाहर भागने में यदि कोई बाधा थी तो क्या और नहीं थी तो लोग उतर क्यों नहीं सके। स्पष्ट है कि डिब्बे के बाहर उन्मादी भीड़ रही होगी जिनके भय से यात्री बाहर नहीं जा सके और जलकर मर गये। बाहर भीड़ के संबंध में आप अपनी जानकारी बताने की कृपा करें।

उत्तर – इस संबंध में कोई निश्चित जानकारी देना कठिन काम ह क्योकि मैं वहॉ गया भी नहीं हूॅ और वहॉ से अम्बिकापुर की दूरी भी इतनी अधिक है कि समाचार बहुत कम आ पाते हैं। मैं बाहर जहॉ भी चर्चा करता हूॅ तो या तो अनजान लोग मिलते हैं जो मुझसे ही पूछते हैं या पेशेवर लोग जो सारी घटना को संघ परिवार समर्थन या विरोध में प्रमाणित करने मे अपनी सारी शक्ति लगा देते हैं।

मेरे विचार में इस घटना में सिर्फ इस बात पर अधिक बहस छिड़ी है कि आग अन्दर से लगी कि बाहर से। बाहर में कितनी भीड़ थी, क्यों इकट्ठी हुई, क्या कर रहो थी आदि सभी बातें ढक सी गई। आपने पहली बार यह मुद्दा उठाकर एक अच्छी शुरूआत की है। भीड़ थी, बहुत थी, आक्रामक थी ऐसा मेरी अपुष्ट जानकारी में हैं। भीड़ योजनाबद्ध तरीके से आग लगाने आई ऐसा मुझे नहीं लगता किन्तु भीड़ के डर से यात्रो नहीं उतर सके यह स्वाभाविक है। आग कैसे लगी यह विवाद का विषय है। भीड़ के अति उत्साही लोग भी गेट छोड़कर कहीं से अन्दर घुसकर आग लगा सकते हैं और अन्दर अफरा तफरी में जलते स्टोव से भी आग लग सकती है। यह बात शायद ही कभी उजागर हो कि आग कैसे लगी क्योंकि जब जॉच आयोग तक प्रभावित हो रहे हैं तो सच्चाई का प्रकटीकरण संभव नहीं दिखता।

इस समय झूठ को सच बनाने में दो गुटों में होड़ मची है। (1)संघ परिवार (2)वामपंथी । संघ परिवार झूठ को भावनात्मक स्परूप देकर सच सिद्ध किया करता है। इससे उसका झूठ चुपचाप कानो कान फैलता है। उसम प्रत्यक्ष तर्क का अभाव होता है। उनका झूठ पढ़े लिखे लोगों में नहीं फैल पाता किन्तु साधारण लोगों में फैलता रहता है। वामपंथी परिवार झूठ को सच का सहारा देकर फैलाता है। साहित्य पर उनकी एक पक्षीय मजबूत पकड़ है। अनेक तथाकथित स्थापित बुद्धिजीवी अखबारों में लेख लिख लिखकर उक्त झूठ को सच प्रमाणित कर देते है। सामान्यतया पढ़े लिखें लोगों में उनका झूठ सच बनकर दौड़ना शुरू कर देता है यदि सच जानना है तो इन दोनों से हटकर एक विश्वसनीय और निष्पक्ष परिवार सामने आवे और तय कर लें कि ''सच ही कहूॅगा, सच के अतिरिक्त कुछ नहीं कहूॅगा'' तभी कुछ सच सामने आ सकता है। मैंने इस संबंध में प्रारंभिक पहल की है जिसके अब तक अच्छे परिणाम आये है, जिसका प्रमाण आपका पत्र है कि आपने मुझे ही सत्य जानने हेतु चुना।

श्री रामनरेश मिश्र, बलिया, उत्तर प्रदेश

मैं एक साहित्यकार हूॅ। पत्र पत्रिकाऍ तथा विद्वानों के विचार पढ़ने, मनन करने एवं लिखने में मेरी बहुत रूचि है ज्ञान तत्व पढ़ना मेरे लिये एक स्वाभाविक घटना के समान है जब मैं ट्रेन में किसी के द्वारा छोड़ गये ज्ञान तत्व को यूॅ ही पढ़ने लगा और आकर्षित होकर ग्राहक बन कर पढ़ना शुरू किया। तबसे आज तक हर अंक पढ़ता भी हूॅ और एक दो साथियों से चर्चा भी करता हूॅ।

मैंने आपमें एक विचित्र किन्तु विलक्षण प्रतिभा का अनुमान लगाया है। मुझे तो लगता है कि ज्ञान तत्व भारत में एकमात्र ऐसी पत्रिका होगी जिसमें ऐसी साधारण भाषा में इतने गंभीर विचारों का समावेश हो। प्रश्नोत्तर भी स्वयं में विचार प्रधान होता है। मेरी अब तक की आदत रही है कि मैं पत्रिकाओं को उलट पुलट कर कोई अच्छे शीर्षक का पूरा लेख और शेष की कुछ लाइनें पढ़कर निपटा देता हूॅ किन्तु ज्ञान तत्व पूरी की पूरी पढ़नी पड़ती है भले ही उसमें कई जगह आपके पूर्व अंकों में वे विचार आ ही क्यों न चुके हों। मैंने अब तक दुनिया में किसी विचारक को नही सुना जो धर्म, समाज, राजनीतिक, अर्थनीति, श्रमनीति आदि सभी नीतियों पर एक समान ज्ञान रखता हो तथा वह उसी सफलता से उसे लिपिबद्ध भी करने की क्षमता रखता हो। मेरी तो इच्छा होती है कि आपसे प्रत्यक्ष मिलकर चर्चा करूॅ। देखिये कब अवसर आता है।

आपके परिश्रम और व्यय से यह अनुमान होता है कि आप किसी निश्चित उद्देश्य के प्रति समर्पित हैं। आप यदि वैचारिक वातावरण में फैली असत्य की धुंध को दूर करना चाहते हैं तो यह कैसे सभव है। मात्र पंद्रह सौ पाठकों तक आपका ज्ञानतत्व जा पाता है। उसमें से चार पाच सौ पढ़ते होंगे। पूरे भारत में आप कैसे वैचारिक सत्य को स्थापित करेंगे? फिर यदि वह धुंध किसी एक दिशा में हो तब न। धर्म, समाज, राजनीति, अर्थनीति, श्रमनीति, न्याय प्रणाली सब ओर ही असत्य धड़ल्ले से सत्य बनकर चल रहा है। अब

तक आपके साथ कोई विचारक जुड़ नहीं पाया। मैं तो विचार करता हूँ तो कुछ समझ में नहीं आता कि आपकी योजना क्या है और कैसे सफल होगी ? कुछ प्रकाश डालने की कृपा करें ?

उत्तर– मुझे खुशी है कि आप ज्ञान तत्व पढ़ते भी हैं और समझते भी हैं। देश भर में विचारकों का अभाव नहीं है। अभाव सिर्फ यह है कि असत्य की प्रचार शक्ति के सामने टिक नहीं पाते। इसलिये हार थक कर अन्तर्मुखी हो जाते है। मैं इस मामले में पृथक प्रवृति का हूँ। धीरे–धीरे ऐसे अन्तर्मुखी विचारकों से जुड़ाव होगा। मैं दोनों दिशाओं में एक साथ काम कर रहा हूँ (1)तात्कालिक (2)दीर्घकालिक। तात्कालिक कार्य के रूप में त्रिसूत्रीय संविधान संशोधन अभियान प्रारंभ किया गया है। यह अभियान भारत की उच्चश्रृंखल राजनीति पर नियंत्रण में सफल होगा। दीर्घकालिक कार्य के रूप में विचार मंथन का प्रयास है जिसमें अपने विचार आप सब तक भेजकर असत्य की वर्तमान धुंध से टकराने का प्रयास है। मेरी जितनी क्षमता है उसका अधिकतम उपयोग मैं कर रहा हू। परिणाम अवश्य ही अच्छा होगा। मैं तो अपना कर्तव्य कर रहा हूँ।

आपने ज्ञान तत्व के स्तर को भारत की एकमात्र वैचारिक पत्रिका के रूप में माना। आपको अब तक प्राप्त वैचारिक पत्रिकाओं में यदि ज्ञानतत्व का ऐसा स्तर महसूस हुआ तो यह मेरे लिये गर्व और प्रोत्साहन की बात हागी। मेरा प्रयास होगा कि आपकी नजर में ज्ञान तत्व की ऐसी भूमिका बनी रहे। यह सच है कि पंद्रह सौ में पांच सौ लोग ही पढ़ते होंगे। सामान्य लोगों की ऐस विषयों में न रूचि है न क्षमता। ऐसी विकट स्थितियों में हम पांच सौ पाठकों तक अपनी बात पहुँचा पा रह हैं। इन पाठकों की सहायता से धीरे धीरे नये पाठक जुड़ेंगे। मेरी योजना है कि ज्ञान तत्व के माध्यम से चार पांच सौ प्रबुद्ध विचारक वर्तमान समस्याओं पर विचार मंथन से जुड़े। इससे कोई मार्ग निकलेगा। अब तक पंद्रह बीस लोग जुड़ सके हैं जो मेरे विचारों की तटस्थ समोक्षा करके अपने विचार लिखते हैं। ऐसे समीक्षक हमारे लिये विशेष महत्व रखते हैं क्योंकि ये समीक्षक मंथन को आगे बढ़ाने में सहायक होते हैं। ज्ञान तत्व के पाठकों की संख्या बढ़े यह तो महत्वपूर्ण है ही किन्तु पढ़कर अपने विचार लिखन वाले की संख्या भी बढ़नी चाहिये। हमारी अब तक की गति भले ही कम हो किन्तु हम संख्या और गुणवत्ता की दृष्टि से निरंतर प्रगति कर रहे हैं जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण आपका पत्र है जिसमें आपने ज्ञान तत्व को भारत की सर्वोच्च गंभीर विचार प्रधान पत्रिकाओं में माना है। मैं तो जो कुछ बौद्धिक शारीरिक और आर्थिक रूप से कर सकता हूं कर ही रहा हूँ। भविष्य आप सबके हाथ में है।

श्री रणछोड़दास गट्टानी, पूर्व न्यायाधीश, जालौरी दरवाजा, जोधपुर, राजस्थान

आनन्द कुमार गुप्त की लिखी पुस्तक व्यक्तित्व और कृतित्व प्राप्त हुई। उक्त पुस्तक में आनन्द जी न अपने पाकथन के पृष्ठ दो पर लिखा है कि ''सन चौरासी से निन्यान्नबे तक के वैचारिक अनुसंधान पर करीब पचास लाख रूपया खर्च हुआ।'' उक्त पचास लाख खच की राशि अविश्वसनीय सी लगती है। विशेषकर उस कालखंड मं जब रूपये का मूल्य भी आज से काफी कम था। बजरंगलाल जी ने वैचारिक अनुसंधान किया जिसमें इतने अधिक खर्च की बात समझ से परे हैं।

श्रो कृष्णदेव सिंह जी, परियारा, मऊ, उत्तर प्रदेश

आनंद कुमार जी की पुस्तक व्यक्तित्व और कृतित्व पढ़ी। इसे पढ़कर यह स्पष्ट नहीं हुआ कि यह किसी पस्तक की समीक्षा है या सार संक्षेप। जिस तरह खंड दिये गये उससे तो सार संक्षप लगता है। पृष्ठ तीन के प्रथम खंड में यह लिखा गया कि बजरंगलाल जी सत्रह वर्ष की उम्र में ही नगरपालिका अध्यक्ष बने। यह उम्र गलत लिखी गई है क्योंकि नगरपालिका अध्यक्ष बनने के लिए पहले की न्यूनतम उम्र पचीस तथा वर्तमान में इक्कीस हैं सत्रह वर्ष का व्यक्ति तो पार्षद नहीं बन सकता तो अध्यक्ष कैस बन सकता है।

श्री गुरूशरण जी, आचार्युल मासिक, 68 सिन्धी कॉलोनी, ग्वालियर, म0प्र0

आनंद कुमार गुप्त की पुस्तक व्यक्तित्व और कृतित्व पूरी पढ़ी। रामानुजगंज आते जाते कई बातें तो पूर्व से ही जानता था। किन्तु इस पुस्तक से बहुत सहायता मिलेगी। अन्त में आनन्द जी ने पुस्तक का मूल्य दो रूपया लिखा जिससे आभास होता है कि ज्ञान तत्व में छपी उक्त विचारों का पुस्तककार भी आनन्द जी ने छपवाया है। मेरी इच्छा है कि उक्त पुस्तक का द्वितीय संस्करण जब भी छपे तो और अधिक विस्तृत जानकारिया के साथ तथा अच्छे ढंग से छपे।

(10)श्री बाबूलाल जी माली 456 अभिनन्दन विस्तार, मंदसौर, म0प्र0

भाई आनन्द कुमार जी का मैं हृदय से आभारी हूँ कि उन्होंने बजरंगलाल जी के व्यक्तित्व और कृतित्व से संक्षिप्त को आठ भागों में समेटकर एक भाग की विस्तृत रूपरेखा रखी। अन्य भागों की भी विस्तृत विवेचना उन्हें करनी चाहिये।

मैं बजरंगलाल जी के साथ कई दिन रहा और उनके विचार ता ज्ञानतत्व में पढ़ता ही रहता हूँ। वे निर्मल मन, अक्रोधी, अहंकार से दूर एक बहुत अच्छे विचारक हैं। उनके विचारों में कोई उलझाव नहीं है। गंभीर से गभीर मुद्दों पर बहुत संक्षिप्त, स्पष्ट तर्कपूर्ण विचार बहुत ही सरल भाषा में रखना उनकी विशेषता है । किन्तु मेरी व्यक्तिगत जानकारी के अनुसार बजरंगलाल जी राममनोहर लोहिया जी क विचारों से बहुत प्रभावित थे। आनन्द जी द्वारा अपनी पुस्तक में वह उल्लेख छूट गया प्रतीत होता है।

श्री राम खेलावन सिंह चौहान, पन्ना मार्केट, देवीगंज, फतेहपुर, उ0प्र0

आनन्द कुमार जी लिखित पुस्तक व्यक्तित्व और कृतित्व पूरी पढ़ा। आनंद जी आपके अच्छे परिचित हैं। उन्होंने बहुत अच्छा प्रयास किया है। मेरी इच्छा है कि वे आपके व्यक्तित्व और कृतित्व के आठों भाग लिखें तो बहुत अच्छा होगा।

श्री अशोक गाड़िया, 308 HIG फ्लैट्स 16 A वसुन्धरा, गाजियावाद, उ0प्र0

श्री आनन्द कुमार जी लिखित पुस्तक मैंने भी पढ़ी और कई मित्रों ने भी पढ़ी। ग्यारह समस्याओं का बहुत ठोक ढंग से वर्णन किया गया है तथा वर्तमान राजनीति के दस नाटक भी विस्तृत रूप स बताये गये हैं किन्तु समाधान का विवरण बहुत संक्षेप में या न के बराबर हैं। आपके भाषण को मैंने दिल्ली कन्सटीट्यूसन क्लब में भी सुना और उसके टेप कई मित्रों को सुनाये। सबकी यह जिज्ञासा है कि ग्यारह समस्याओं के समाधान पर आपके विचार बिल्कुल मौन हैं। आप जब तक समाधान नहीं बताते तब तक बहस पूर्णता को प्राप्त नहीं होती।

उत्तर – आनन्द कुमार जी गुप्त इसी क्षेत्र के निवासी ह तथा मुझे गुरू तुल्य मानते हैं। उन्होंने व्यक्तित्व और कृतित्व पस्तक पकाशन के पूर्व मुझे दिखाई थी। वे मुझे प्रायः स्वामी जी कहा करते हैं किन्तु पुस्तक में मैंने स्वामी जी शब्द प्रयोग न करने की सलाह दी थी। वे रामानुजगंज में ही पले बढ़े हैं अतः मेरे व्यक्तित्व तथा कृतित्व की वास्तविकता से परिचित हैं। उन्होंने जो भी लिखा ह वह किसी पुस्तक की समीक्षा भी नहीं है और सार संक्षेप भी नहीं। मैं अपने भाषणों को सुनकर उनका सात खंडों का संक्षिप्त तथा एक खंड चार का अक्षरशः उन्होंने इस पुस्तक में लिखा है। शेष सात खंडों की घटनाएँ या विचार अति संक्षिप्त होने से अस्पष्ट अर्थ निकलना स्वाभाविक है जो अनेक प्रश्न पैदा करता है। किसी वैचारिक अनुसंधान पर पंद्रह वर्षो में कुछ हजार रूपया से अधिक खर्च होना अस्वाभाविक प्रतीत होता है किन्तु यह अनुसंधान लीक से हटकर स्वदेशी तकनीक से किये जाने से इतना अधिक खर्च आया। इस पचास लाख के खर्चे में शासकीय आक्रमण से होने वाली क्षति और बचाव का खच व्यापार संघ का न होकर मेरा अपना पारिवारिक था, अतः जोड़ा नहीं गया।

उक्त अनुसंधान के निमित्त चार हजार से सात हजार तक पाक्षिक पत्रिका लगभग निःशुल्क जाती थी। प्रत्येक चार पांच वर्ष में विचार मंथन में भाग लेने वाले विद्वानों को प्रत्यक्ष बुलाकर विचार मंथन होता था जिसमें लगभग एक सौ दो सौ तक विद्वान भाग लेते थे तथा जो दस से पंद्रह दिन तक लगातार चलता था। प्रत्येक आने वाले को आने जाने का पूरा मार्ग व्यय तथा भोजन निवास की सुविधा दी जाती थी। आश्रम के दा कार्यकर्ता पूरे वर्ष भर देश भर में घूम घूमकर उक्त विद्वानों से प्रत्यक्ष चर्चा करते थे। मैं स्वयं टीम लेकर दो तीन बार पूरे देश में जाकर तथा वैचारिक सम्मेलन आयोजित करके विचार मंथन किया करता था। विचार मंथन से निकले प्रारंभिक निष्कर्षो पर रामानुजगंज शहर के आसपास प्रयोग करके देखा भी जाता था। अतः आनन्द जी ने जो अनुमानित व्यय लिखा है वह सही है। कोई मुद्रण की त्रुटि नहीं है।

सत्रह वर्ष की उम्र म अध्यक्ष बनने की बात अर्ध सत्य है। बहुत सक्षिप्त होने से यह भ्रम हुआ है। जब मैं सोलह वर्ष का था और पढ़ता था तभी मैं डाल्टेनगंज में राममनोहर लोहिया जी का भाषण सुनकर इतना प्रभावित हुआ कि वहॉ के प्रमुख नेता पूरनचन्द जी को राजनैतिक मार्गदर्शक मान बैठा और रामानुजगंज में समाजवादो पार्टी का अध्यक्ष बनकर पार्टी की शाखा बना ली। एक वर्ष बाद ही नगरपालिका चुनाव म हमारे समाजवादी दल ने चनाव लड़कर सात में से पांच सीट जीत लीं और मुझे नगरपालिका अध्यक्ष चुन लिया। जब मैं अनुविभागीय अधिकारी से मिला तब पता चला कि मेरी उम्र अध्यक्ष पद हेतु आठ वर्ष कम है। तब मेरे दूसरे कार्यकर्ता को अध्यक्ष चुना गया। मेरी उम्र सन पैसठ मं पचोस वर्ष की हुई तब मैं विधिवत् चुनाव लड़कर नगरपालिका अध्यक्ष बना। पुस्तक में लिखा अंश अति संक्षिप्त होने से भ्रम हुआ है। अगले संस्करण में या तो कुछ विस्तार दे दिया जायेगा या सत्रह को पच्चीस करा दिया जायेगा जिससे भ्रम न रहे।

ज्ञान तत्व में प्रकाशित यह सम्पूर्ण जानकारी पुस्तकाकार भी छपी हैं जिसका मूल्य दो रूपया लिखा गया है यद्यपि उसकी लागत तीन रूपये आइ है। गुजरात अहमदाबाद के भाई जयेन्द्र शाह जी ने पोस्ट से पचास प्रतियॉ वितरण हेतु मंगाई भो हैं जो उन्हें भेज दी गई है। हमारे ही सरगुजा जिले के भाई हुकुमचन्द्र अगवाल शंकरगढ़ तथा भाई पन्नालाल जी बरियों वाला ने भी एक हजार रूपया जमा कराया है। उनके नाम की पुस्तकें भी यथा शीघ्र निःशुल्क बट जायेगी। लेखक आनन्द कुमार जी की उक्त पुस्तक का अगला संस्करण छपवाने में कुछ और सुधार किया जायेगा। इस पुस्तक की मांग से प्रोत्साहित होकर आनन्द कुमार जी में मेरे पांचवें खंड के भाषण को भी मुद्रित कराने की सोच रहे हैं। एक माह में यह काम हो जायेगा तब आपको ज्ञान तत्व में जायेगा। मेरे भाषण में समाधान की चर्चा बहुत संक्षिप्त हो पाती है क्योंकि समाधान के तीन चरण माने गये हैं (1) उच्चश्रृंखल राजनीति पर अंकुश हेतु दो तीन छोटे छोटे संविधान संशोधन। इस कार्य को अंतिम रूप देने हेतु पांच अक्टूबर से अभियान प्रारंभ हो चुका है। (2) ग्यारह समस्याओं के समाधान सहित अन्य महत्वपूर्ण संविधान संशोधन। इस पर हम लोग पंद्रह वर्षो में प्रस्तावित निष्कर्ष निकाल चुके हैं किन्तु सितम्बर दो हजार छः में देश भर के एक हजार विभिन्न विचारों के शीर्ष विद्वानों को एक माह तक एक स्थान पर बैठकर ऐसे संशोधनों का पुनः परीक्षण करके अन्तिम निष्कर्ष की योजना है। उसके बाद इन निष्कर्षो को जनमत

जागरण का आधार बनाया जा सकता है। (3) आदर्श समाज रचना। उपरोक्त दो कार्य पूरे होने के बाद समाज की समस्याओं के समाधान हेतु जनमत खड़ा करने का प्रयास किया जायेगा। जब तक दो काम पूरे न हो जावें तब तक मैं समाज परिवर्तन के किसी काम में नहीं लगूंगा । इस तरह इस बार सन् पचहत्तर सरीखी भूल से बचने की पूरी तैयारी की गई है किन्तु भाषण में समय कम रहने से मैं समाधान पर विशेष चर्चा नहीं करता। यदि आप मुझे पुनः आमंत्रित करें तो मैं अपने भाषण के शेष अंश पर बता सकता हूँ।

मेरे भाषण के सभी आठ खंड छपें यह न तो संभव है न उचित। प्रथम खंड में मेरे प्रारंभिक कृत्य, दूसरे में राजनैतिक अनुभव तीसरे में अनुसंधान का तरीका और शासकीय आक्रमण शामिल हैं। ये तीनों ही खंड सिर्फ सूचनात्मक प्रभाव रखते हैं। इनका आगे योजना पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। छठवां खंड प्रयोग का है, सातवॉ संविधान संशोधन के प्रयत्नों का है। इनका उपयोग भी सामान्य है। आठवॉ खंड आपकी सक्रियता पर है। इन तीन खंडों पर भी बाद में पुस्तक लिखी जा सकती है। अभी सबसे महत्व का खंड चार और उसके बाद खंड पांच है। चार तो लिखकर जा ही चुका है, पाचवा लिखकर भेजने की तैयारी है। पूरी पुस्तक लिखना आसान है किन्तु विक्रय की समस्या होगी इसलिये कदम बहुत सोच सोचकर उठाना पड़ता है।

श्री कुन्दनलाल जी कुशवाहा, खलीलपुर, उ0प्र0

ज्ञान तत्व अंक सतासी मिला। पूरा का पूरा एक बार में ही पढ़ गया। सोच रहा हूँ कि ज्ञान के इस अमूल्य तत्व को कैसे इतनी शक्ति प्रदान हो कि वह वर्तमान सामाजिक अंधकार को चीरकर एकाएक आगे निकल जाय। इस कार्य के लिये आपको शक्तिदाता की शक्ति की आवश्यकता है। गायत्री परिवार मं वह शक्ति है। गायत्री शक्ति पीठ के साथ जुड़कर यह काम सहज सरल हा सकता है। समाज का भी भला होगा और आपके भी पयत्न सफल होने से संतोष होगा। आप अपनी शक्ति को नहीं पहचान रहे हैं। आप उन्हीं पांच वोर योद्धाओं में से एक हैं जो महाकाल द्वारा पांच अलग अलग मोर्चो पर नियुक्त हैं। धैर्य पूर्वक आगे बढ़ते रहिये। शीघ्र हो सफलता मिलेगी।

उत्तर– आपकी शुभकामनाएं प्राप्त हुई। गायत्री परिवार से मेरा सबंध रहा है। पण्डित श्री राम जी शर्मा से मथुरा और बाद में हरिद्वार में भी मार्गदर्शन मिला ह। श्री प्रणव पंड्या जी से न कभी चर्चा हुई है न ही सम्पर्क। गायत्री परिवार जिस काम में लगा है वह अत्यन्त महत्व का है किन्तु मेरे विचार में वह तीसरी सीढो है। राजनीति पर अंकुश लगाये बिना धम का प्रभाव समाज पर नहीं पड़ेगा। यदि कभी संयोग बना तो अपनी पुस्तक या भाषण हरिद्वार शान्तिकुंज में रखा जा सकता है। उस कार्यक्रम क माध्यम से चर्चा आगे बढ़ेगी। यह काय आप मित्रों के लिये संभव करना अधिक आसान है। आप उन्हें साहित्य भी भेज सकते है तथा चर्चा भी कर सकते हैं।

श्री कृष्ण कुमार जी खन्ना, स्पोर्ट्स कॉलोनी, मेरठ, उ0प्र0

सर्वोदय जगत में पढ़ने को मिला कि अपल में दाण्डी से अहमदनगर तक दो यात्राएँ निकल रही हैं। आप भी उस यात्रा के साथ हैं या आपका काम पृथक से चलता रहेगा? अभी आप बंग जी के साथ चल रहे हैं या पृथक पृथक। ज्ञान तत्व में इस संबंध में कुछ न छपने से जानकारी का अभाव ही रहता है।

उत्तर– मेरी और बंग जी की यात्रा छः माह पूर्व ही पूरी हो गई थी। उसके बाद सर्वोदय ने पचीस लाख हस्ताक्षर त्रिसूत्रीय संविधान संशोधन अभियान को गति देने का प्रस्ताव पारित किया था। लोक स्वराज्य मंच न भी पांच अक्टूबर को अम्बिकापुर में प्रस्ताव पारित करके उक्त प्रस्ताव में मदद की घोषणा की थी। इस प्रस्ताव के पक्ष मे अमरनाथ भाई तथा ठाकुरदासजी बंग ने पूरे भारत की एक माह की यात्रा भी की थी। कालीकट सम्मेलन तक तो बहत उत्साह था किन्तु ज्यों ज्यों तीस जनवरी से बाहर फरवरी की तारीख नजदीक आती दिखी त्यों त्यों उत्साह कम होने लगा। अभी जनवरी में मैंने अनुभव किया कि सकियता प्रस्ताव तक सिमट रही है। बंग जी ने भी लक्ष्य घटाकर पांच लाख हस्ताक्षर तक सीमित कर दिया किन्तु वहॉ उपस्थित अनेक प्रमुखों में इस कार्य के प्रति उत्साह नहीं दिखा। अब मार्च तेइस चौबीस को बंग जी के साथ पुनः भुसावल में बैठकर चर्चा होने के बाद ही आगे की योजना बनेगी।

अभी जो यात्रा निकलने वाली है उसके प्रति मेरा पूर्ण समर्थन है, सहयोग नहीं। मैं अन्य कार्यो म व्यस्त भी हूँ। फिर मै इस यात्रा की उपयोगिता ततीय करण में अधिक देखता हूँ। आंख मूंदकर गाय के लिये आटा पीसने की प्रक्रिया को मैं तब तक सक्रिय सहयाग नही कर सकता जब तक गाय को धक्का देकर कुत्ता आटा खाता रहेगा। मैं तो पहले चरण में कुत्ते से मुक्ति पाऊँगा, दूसरे चरण में गाय को खाने में लगाऊँगा और तीसरे चरण में आंख बन्द करक निर्लिप्त भाव से चक्की चलाऊँगा। मुख्य मुददा प्राथमिकताएँ तय करने का है। अपने महापुरूषों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के प्रयास बहुत अच्छे हैं किन्तु मुझ जैसे व्यक्ति के लिये यह उचित नहीं कि वह ग्यारह समस्याओं का समाधान खोजने या उच्चश्रृंखल राजनीति पर अंकुश लगाने के प्रयत्नों से पलायन करके गांधी जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने की यात्रा करे। ऐसी ही यात्राएँ तो संघ के लोग भी करते रहते हैं जो गांधी जी के स्थान पर राम और कृष्ण के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं। यह समय संघर्ष शुरू करने का है हम यदि कोई सत्याग्रह प्रारंभ

करते तो अधिक अच्छा परिणाम होता। फिर भी जो यात्रा हो रही है उसका लाभ अवश्य होगा। भले ही प्राथमिकता के आधार पर मात्रा का फर्क ही क्यों न हो। जो लोग गलत दिशा में जा रहे हैं या निष्क्रिय बैठे हैं उन्हें अच्छी दिशा में सक्रिय करने में दाण्डी यात्रा सहायक होगी। अतः ऐसी यात्रा का भरपूर समर्थन करने की आवश्यकता है।

(15) श्री संतोष शर्मा BA57 शालीमार बाग दिल्ली 88

ज्ञान तत्व अंक सत्तासी मिला। आनन्द कुमार जी को भी उनके प्रयास के समर्थन में बधाई कार्ड भेजा है। आप बहुत ठीक दिशा में बढ़ रहे हैं। हमारा पूरा पूरा समर्थन है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि कुछ स्थापित व्यक्तित्व आपके सम्पर्क में आवें। तभी सत्य को उचित प्रोत्साहन स्थान हो सकेगा।

मैंने बहुत कुछ आपके बारे में पढ़ा। कई बार आपके बारे में सुना भी। आनन्द जी की पुस्तक भी पढ़ी। परन्तु आपके गुरू कौन हैं इसका कहीं उल्लेख नहीं आया। कौन हैं आपके गुरू यह आप लिखने की कृपा करें। कहीं ऐसा तो नहीं कि आपका अनुभव और समाज से गहरा सम्पर्क ही आपका गुरू हो?

उत्तर– मैंने जीवन में किसी व्यक्ति को गुरू नहीं माना। बचपन में जब मैं एक दलित मित्र लड़के के घर का भोजन करने के कारण दण्डित हुआ, प्रतिरोध करने पर हिन्दू धर्म प्रमुखों का कोप भाजन बना, इसाईयों के निकट गया, तब मुझे स्वप्न में एक सन्यासोनुमा अपरिचित ने कुछ प्रेरणा दी। कुछ माह बाद जब आर्य समाज के प्रमुख लोगों ने मुझे अपने साथ जोड़ा तब मुझे लगा कि स्वप्न में दिशा देने वाले सन्यासी स्वामी दयानन्द थे। मुझमें यदि कोई भी चिन्तन या तर्क शक्ति है तो मैं आर्य समाज को उसका सम्पूर्ण श्रेय देता हूँ। जीवन में मुझे जहॉ भी कुछ मिला वहीं मैंने उन्हें गुरू मानकर प्रसाद स्वरूप उनकी शिक्षाओं को ग्रहण किया। किन्तु कोई एक व्यक्ति मेरा गुरू नहीं है क्योंकि मुझे भारत की वर्तमान स्थिति का समाधान खोजे बिना चैन नहीं है और मुझ ऐसा कोई गुरू मिला नहीं जो इस सबंध में बहुत आगे बढ़ गया हो।

श्री रामकृष्ण पौराणिक, 10/8 अल्कनन्दा नगर, उज्जैन, म0प्र0

(1) ज्ञान तत्व अंक अठासी पढ़ा क्योकि विषय अत्यंत गंभीर था। आपने पृष्ठ 39 पर लिखा कि ''आर्य समाज अब भी मानता है कि धर्म की रक्षा हुई तो हिन्दू धर्म की रक्षा स्वतः हो जायेगी किन्तु यदि धर्म की चिन्ता छोड़कर हिन्दू धर्म को बचाने की चिन्ता हुई तो न धर्म बचेगा न हिन्दू।'' आप इस संबंध में धर्म और हिन्दू धर्म के अन्तर को स्पष्ट करें कि धर्म आर हिन्दू धर्म की सुरक्षा के भेद से आपका आशय क्या है ?

(2) आपने लिखा कि संघ को या तो धर्म की सुरक्षा का नेतृत्व करना चाहिये या हिन्दू धर्म पर अब दया करके उसे नइ राह चुनने का अवसर देना चाहिये। ''इन वाक्यों में धर्म की सुरक्षा का नेतृत्व से आपका आशय क्या है।''

(3) क्रमांक दो में उधृत वाक्यांश से ऐसा आभास होता है कि आप संघ को हिन्दू धर्म का संरक्षक मानते हैं जबकि उसी लेख के पृष्ठ 36 पर आपने लिखा कि ''संघ ने स्वयं को हिन्दू धर्म का प्रतिनिधि समझने की भूल की जबकि हिन्दू सघ को प्रतिनिधि नहीं मानत।'' उपरोक्त दोनों वाक्यांशो में कुछ विरोधाभास प्रकट होता है।

(4) ज्ञानतत्व मंथन तथा ज्ञानतत्व पाक्षिक के पढ़ने से आभास होता है कि आप सर्वोदय तथा आर्य समाज के निकट सम्पर्क में हैं किन्तु अब तक आपका संघ परिवार से कोइ सम्पर्क हुआ हो ऐसा नहीं लगता। आपने ज्ञान तत्व के अंक 88 के अंतिम पृष्ठ पर संघ परिवार सहित सबसे जुड़कर काम करने की प्रतिबद्धता घोषित की किन्तु अब तक सम्पर्क नहीं हुआ तो क्या ? और हुआ तो क्या बात हुई।

(5) (क) ज्ञान तत्व का वार्षिक शुल्क किस नाम से भेंजे। यह जानकारी प्रत्येक पृष्ठ पर छपनी चाहिये।
(ख) ज्ञान तत्व के कुछ पुराने अंक भेज दीजिये। अन्य पाठकों को पढ़ाकर ग्राहक बनाने में सुविधा होगी।
(ग) आश्रम से प्रकाशित साहित्य की एक एक प्रति भेज दें।
(घ) यदि कोई बैठक या सम्मेलन हो तो मझे भी सूचित करने की कृपा करें।

उत्तर– आपके सभी प्रश्नों से ऐसा आभास होता है कि आग दोनों ओर समान रूप से जल रही है। सृष्टि के प्रारंभ में प्रवृत्तियॉ दो ही हैं (1) दैवी प्रवृति (2) आसुरी प्रवृत्ति। इनमें लगातार संघर्ष चलता रहा है और कभी दैवी प्रवृत्ति तो कभी आसरी प्रवृत्ति जीतते हारते रही है किन्तु न कभी कोइ एक प्रवृत्ति समाप्त हुई न होगी। जब भी कोई एक प्रवृत्ति हारती है तो उसी दिन से वह धीरे धीरे पनः आगे सरकना शुरू कर देती है।

दैवी प्रवृत्ति को धर्म और आसुरी को धर्म विरोधी या विधर्मी कहते हैं। धर्म को अधिकाधिक शक्ति प्रदान करने के लिये महापुरूष आते रहते हैं। इन्हीं महापुरूषों के नाम पर बाद में संगठन बन जाते हैं जिन्हें सम्प्रदाय कहते ह। हिन्दू धर्म ऐसे अनेक सम्प्रदायों का सामूहिक मंच है परन्तु इस्लाम या इसाइयत अब तक से मंच का स्वरूप ग्रहण नहीं कर सके किन्तु धर्म कहे जाने

लगे। हिन्दू, मुसलमान, इसाई आदि धर्म के ही अंग या भाग हैं धर्म विरोधियों के नहीं। इनमें सामान्यकाल में प्रतिस्पर्धा भी स्वाभाविक है जब धर्म को धर्म विरोधियों से कोई खतरा न हो। किन्तु जब धर्म को ही धर्म विरोधियों से खतरा हो तब हिन्दू, मुसलमान और इसाई की प्रतिस्पर्धा हमारी उचित प्राथमिकता नहीं मानी जा सकती।

वर्तमान समय में शराफत खतरे में है। ग्यारह समस्याएँ लगातार बढ़ रही हैं। अपराधी तत्व विभिन्न धार्मिक गुटों में शामिल हो गये हैं। डकैत मंदिर बनवाने लगे हैं। हम लोगों की टीम भारत भ्रमण के समय अयोध्या गई। हनुमान गढ़ी के विषय में बहुत कुछ सुनने को मिला। हम लोगों ने तत्कालीन सांसद महंत अवद्यनाथ जी से पूछा कि अयाध्या के एक मंदिर के नीचे यू0पी0, बिहार के अनेक अपराधी सुरक्षा पूर्वक अपनी आपराधिक गतिविधियॉ चलाते हैं किन्तु आपके मंदिर आंदोलन में सहायक हैं। ऐसे अवसर में यदि आपकी जगह भगवान राम होते तो क्या करते ? तो उन्होंने तत्काल उत्तर दिया कि भगवान राम क्या करते यह मैं नहीं बता सकता किन्तु हम जो कर रहे हैं वह बिल्कुल ठीक है क्याकि ये अपराधी तो अपने हैं। इनसे बाद में भो निपट लेंगे। पहले विधर्मिया से तो निपट लिया जाये। उनकी दृष्टि से हिन्दू धर्म विरोधी विधर्मी है किन्तु मेरी दृष्टि में धर्म विरूद्ध आचरण करने वाले विधर्मी हैं। मेरे विचार म पहले ग्यारह समस्याओं का समाधान करके धर्म को सुरक्षित कर लें। मुसलमान, इसाई, हिन्दू का आपसी निपटारा उसके बाद होगा।

प्रश्न उठता है कि हम धर्म की रक्षा करते रहें और इस्लाम हमें नुकसान करके अपना संख्या बल विस्तार करता रहे यह कितना न्यायसंगत है। हम इस चिन्ता को समझते हैं ग्यारह समस्याओं मं साम्प्रदायिकता भी शामिल है तथा इन समस्याओं के पंचसूत्रीय समाधान में समान नागरिक संहिता भी शामिल है। यदि समान नागरिक संहिता और धर्म परिवर्तन पर रोक लगा दी जावे तो यह खतरा आंशिक रूप से टल सकता है और शेष दस समस्याओं का समाधान भी साथ में हो सकता है। संघ के एजेन्डा में ये दोनों मुद्दे हैं लेकिन अन्य दस मुददों के समाधान के साथ नहीं है बल्कि अन्य दस समस्याओं के स्थान पर दूसरे प्रकार के दस कम महत्व के मुद्दे हैं जिन्हें अभी रोककर बाद के लिये छोड़ा जा सकता है।

संघ और हिन्दू के संबंधों के विषय में मेर कथन में विरोधाभास नहीं है। संघ अपने को हिन्दओं का प्रतिनिधि मानता है जबकि हिन्दू ऐसा नहीं मानते क्योंकि हिन्दुओं का आधे से भी कम संघ से जुड़ा है। हिन्दू स्वभाव और संस्कृति के रूप मे इस्लाम और इसाइयत से भिन्न है। हिन्दू संख्या विस्तार की अपेक्षा गुण अर्थात् धर्म विस्तार का पक्षधर है। हिन्दू त्याग का टकराव से अधिक महत्व देता है। हिन्दुओं को स्वभाव और संस्कृति परिवर्तन की दिशा न देकर यदि मार्ग बताया जाय तो वह तत्काल ग्रहण कर सकता है। समान नागरिक संहिता और धर्म परिवर्तन पर रोक उसके संस्कृति और स्वभाव अनुकूल विषय है जबकि धर्म वापसी, स्वदेशी और मंदिर के लिये विवाद उसके स्वभाव प्रतिकूल विषय। आप यदि अस्सी वर्ष बाद भी हिन्दू संघ के साथ पूरी तरह नहीं जुड़ा तो यह मुख्य कारण है। यदि संघ पांच वर्षो के लिये नये ढंग से प्रयोग करें तो चमत्कारिक परिणाम आ सकते हैं। आप प्रश्न करेंगे कि सघ ने प्रारंभ में समान नागरिक संहिता और धर्म परिवर्तन पर रोक का मुद्दा उठाया। जब सफलता नहीं मिली तब मंदिर उठाया। मेरे विचार म ऐसा नहीं है। करीब तीस चालीस वर्ष पूर्व मध्यप्रदश में धर्म स्वातंत्रय विधेयक पारित हुआ तब कांग्रेस सरकार थी। धीरे धीरे संघ की राजनैतिक प्रतिबद्धता ने सब गुड़ गोबर कर दिया। दूसरी बात यह है कि संघ ने इन मुद्दों को जातीय कटुता, हिंसा, आतंक, मिलावट और भ्रष्टाचार के साथ नहीं उठाया। सिर्फ दो मुद्दे उठाने से कठिनाई हुई इसलिये मेरा सुझाव है कि संघ ग्यारह समस्याओं के समाधान को लक्ष्य करके एक रणनीति बनावे जिससे धर्म को अपराधियों से सुरक्षा हो सके। यदि संघ ने तय कर लिया हो कि यह संभव नहीं तो संघ अपना नेतृत्व छोड़कर हिन्दुओं को नई राह चुनने में सहयोग करे। हिन्दू वास्तव में दुविधा में है। उस संघ की बातें तो ठीक लगती है किन्तु संस्कार बाधक है। इसीलिये ऐसी स्थिति है कि यदि हिन्दू नहीं बदल सकता तो सघ अपने को बदल ले। मुसलमान आम तौर पर शराफत से अधिक धर्म को महत्व देता है, इसाई दोनों को समान महत्व देता है और हिन्दू शराफत को ही धर्म मानता है। आज अपराधियों के विरूद्ध शराफत का विधर्म के विरूद्ध धर्म या आसुरी प्रवृत्तियों के विरूद्ध दैवीवृत्तियों द्वारा युद्ध की घोषणा का नेतृत्व नहीं करेगा तो कौन करेगा ?

सर्वोदय के पास भी बहुत काम है। आर्य समाज के पास भी काम बहुत है किन्तु दोनों संगठनों के कुछ विद्वानों से निकट का सम्पर्क है क्योकि दानों संस्थाओं के मूल चरित्र म शराफत की सुरक्षा और सत्ता का अकेन्द्रीयकरण है। इसलिये दोनों को समझना कठिन नहीं। फिर दोनो का संगठनिक ढांचा भी ढीला ढाला है। फिर भी दोनों के अपनी कमजोर शक्ति को देखते हुए इतने बड़े काम में सक्रिय होने से हाथ पांव फूलने लगते हैं। गोविन्दाचार्य जी ने इस दिशा में विचार करना शुरू किया है और इन मुद्दों पर काम शुरू करने के लिये एक कमेटी बनाई है। संघ के विचारक देवेन्द्र स्वरूप जी ने मेरा भाषण दो बार सुना है और चर्चा भी हुइ है किन्तु मेरी संघ के किसी वरिष्ठ से काई बात नहीं हो पाई है। इसलिये मेरा संवाद सीधा कार्यकर्ताओं से है।

ज्ञान तत्व का वार्षिक शुल्क बजरंगलाल, बनारस चौक, अम्बिकापुर, सरगुजा छ.ग. 497001 के नाम भेज सकते हैं या भविष्य में इकट्ठा भेजने का पत्र लिख सकते हैं। हम ज्ञान तत्व में अब तक यह लाइन नहीं छापते क्योंकि ज्ञान तत्व अधिकांश पबुद्ध पाठकों के पास ही जाता है। जो लोग शुल्क नहीं भेजते या भेजने का पत्र भी नहीं लिखते उन्हें हम गरीबी रेखा से नीचे मान लेते हैं। ज्ञान तत्व के पुराने अंक आपको भेंजे। ज्ञान तत्व का पत्येक पुराना अंक विचार संग्रह है। आप दूसरों को भी दे सकते हैं और स्वयं भी पढ़ सकते हैं। आप यदि ग्राहक बनावें तो शुल्क अभो अपने पास रखकर कभी हमारा कार्यकर्ता जावे तो दे सकते हैं। हम आपके

लिखे अनुसार उन्हें शुल्क प्राप्त ग्राहक बना लेंगे। साहित्य भी आपको भेज दें। सम्भवतः अप्रैल माह के अन्त तक हमारे संगठन सचिव आनन्द कुमार गुप्त जी आपसे प्रत्यक्ष मिले तब भी साहित्य ले जा सकते हैं। आगे के कार्यक्रमों में आपको बुलायेंगे ही या यदि आप उज्जैन में पचास सौ लोगों को बुलाना चाहें तो मैं वहॉ भी आकर विचार प्रस्तुति और प्रत्यक्ष प्रश्नोत्तर संभव कर सकता हूँ।